विन्दा करंदीकर

Vinda Karandikar

श्री विन्दा करंदीकर, जिन्हें साहित्य अकादेमी, आज अपने सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, से विभूषित कर रही है, मराठी के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कवियों में हैं, जो लगभग आधी सदी से भारतीय कविता को अपने अनुपम योगदान से समृद्ध कर रहे हैं।

गोविन्द विनायक करंदीकर आधुनिक मराठी काव्य-परिदृश्य के शिखर व्यक्तित्व हैं। प्रो. वसंत बापट ने आपको 'कवियों का कवि' कहा है और डॉ. सुधीर रसाल आपको ऐसे कवि के रूप में रूपायित करते हैं, जो समूचे काव्य-व्योम पर फैला हुआ है। विन्दा आधुनिक मराठी कवियों में सबसे अधिक प्रयोगशील और सबसे व्यापक हैं। आपकी कविता को अकादमिक मान्यता के साथ-साथ लोकप्रियता भी मिली है। निबंधकार, समालोचक और अनुवादक के रूप में आपकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। इस उपलब्धि के पीछे सौन्दर्यात्मक पूर्णता की अनवरत तलाश और सांसारिक संघर्षों से भरा एक लम्बा रचनात्मक जीवन है।

विन्दा का जन्म 23 अगस्त 1918 को महाराष्ट्र के सिन्धुदुर्ग ज़िले के ढालवाल नामक स्थान में हुआ। आपके पिता एक ग़रीब किसान थे। विन्दा की शिक्षा प्राथमिक स्तर पर ही रुक गयी होती, लेकिन एक पारिवारिक मित्र, जो पेशे से रसोइया थे, 1931 में बालक विन्दा को अपने साथ कोल्हापुर ले गये। उन्होंने सप्ताह के सात दिनों के लिए सात परिवारों में बालक के एक-एक दिन के भोजन की व्यवस्था कर दी और उसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने लायक़ बनाया। विन्दा के प्रसिद्ध अकादमिक और साहित्यिक कार्य-जीवन की ऐसी साधारण शुरूआत थी।

विन्दा ने 1935 में न्यू स्कूल से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और कोल्हापुर के राजाराम कॉलेज में प्रवेश लिया। वहाँ आप अपने एक प्रोफ़ेसर माधव जुलियन से प्रभावित हुए, जो उस समय के प्रमुख मराठी कवि थे। माधव जुलियन ने कविता और विद्वत्ता के प्रति आपके विश्वास को क़ायम रखा। विन्दा ने अंग्रेज़ी साहित्य का विशेष अध्ययन किया। ब्राउनिंग, हाफकिंस और एलियट का अध्ययन आपकी कविता को प्रभावित करने लगा, जो शुरू में कुछ रोमांटिक थी। चार्ल्स लैम्ब के अध्ययन ने व्यक्तिव्यंजक निबंध में आपकी रुचि जगायी।

आपने 1939 में अंग्रेज़ी में स्नातक (ऑनर्स) किया, तथापि परीक्षाफल घोषित होने से पहले ही आप हैदराबाद आंदोलन (1934) के सिलसिले में एक सत्याग्रही के रूप में गिरफ़्तार कर लिये गये। चार महीने की कठिन क़ैद के बाद आप छोड़े गये। इसी बीच आपको 'कैंडी मेमोरियल प्राइज़' और 'ट्यूटरशिप' से पुरस्कृत किया गया। लेकिन एक दुर्घटना में हाथ टूट

SRI Vinda Karandikar on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today is one of the most significant poets in Marathi who has been enriching Indian poetry with his unique contributions for nearly half-a-century.

Govind Vinayak Karandikar is a towering figure in the modern Marathi poetry scene. Prof. Vasant Bapat has described him as 'the poet of poets' and Dr. Sudhir Rasal has described him as 'the poet who spans the entire sky of poetry.' Vinda is perhaps the most experimental and the most comprehensive of all modern Marathi poets and his poetry has won academic acclaim as well as popular applause. As an essayist, critic and translator he has also very significant achievement to his credit. A long creative life, full of worldly struggles and ceaseless in its search for aesthetic perfection, is at the back of this achievement.

Vinda was born on the 23rd of August 1918 at Dhalawal in the Sindhudurg district of Maharashtra. His father was a poor farmer and Vinda's education would have stopped at the primary stage. But a family friend, who was a cook by profession, took the boy with him to Kolhapur in 1931, arranged for his meals with seven different families for seven days of the week, and enabled him to get higher education. Such was the humble beginning of Vinda's distinguished academic and literary career.

Vinda matriculated from New School in 1935 and joined Rajaram College, Kolhapur, where he came under the influence of Madhav Julian who was one of his professors and the foremost Marathi poet of the period. Madhav Julian sustained his faith in poetry and scholarship. Vinda specialised in English Literature and his study of Browning, Hopkins and Eliot began to influence his poetry, which was rather romantic in the beginning. His study of Charles Lamb roused his interest in the personal essay. He graduated with honours in English in 1939.

However, even before the result was out, he courted arrest as a *satyagrahi* in the Hyderabad Movement (1934). He was released after four months of rigorous imprisonment. Meanwhile, he had won the Candy Memorial Prize and the Tutorship in his college. But on account of an

जाने के कारण आप एम.ए. की परीक्षा 1946 तक नहीं दे सके।

विन्दा के जीवन में छह वर्षों का मध्यवर्ती काल (1939-1945) संघर्ष, कठिनाई और बेचैनी का काल था, लेकिन एक तरह से यह भावात्मक, बौद्धिक और साहित्यिक विकास का भी काल था। 1940 में आपने येसु गोखले के साथ अदूरदर्शी प्रेम विवाह किया, जिनका कुछ ही वर्षों बाद निधन हो गया। 1942 से 1945 तक आप सतारा ज़िले के तासगाँव स्थित विद्यालय में हाईस्कूल अध्यापक रहे और उस सीमित आय में आपको अपना, दो बहनों का और एक छोटे भाई का ख़र्च चलाना पड़ा, जो टी.बी. का मरीज़ हो गया था। शांति की तलाश में, थोड़े-से समय के लिए आपने गाँधीवाद को अपनाया, अपने हाथ से बुने खादी वस्त्र पहने, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रुचि ली और तबला सीखने की कोशिश की। लेकिन भारत छोड़ो आंदोलन के प्रभाव ने आपको विश्राम नहीं करने दिया और आप पड़ोस के गाँवों में सेना में भरती के ख़िलाफ़ प्रचार करने लगे।

1943 में विन्दा मार्क्सवाद के गम्भीर अध्ययन में प्रवृत्त हुए, जिसके परिणामस्वरूप आपके जीवन में एक महत्त्वपूर्ण बौद्धिक संकट पैदा हुआ। लेकिन बर्ट्रेंड रसेल और फ्रायड के अध्ययन के कारण आप मार्क्सवादी कट्टरता से बच गये। इस काल के दौरान प्रकाशित 'स्वेदगंगा', 'कीर्तन' और 'रक्त समाधि'-जैसी कविताएँ आपकी विषयवस्तु, रूप-विन्यास, शैली और लय की मौलिकता दरसाती हैं और आपकी 'एंटी रोमांटिक' प्रवृत्ति को उद्घाटित करती हैं। लेकिन इन कविताओं को प्रकाशित करने के लिए कोई प्रकाशक तैयार नहीं हुआ।

एम.ए. उपाधि प्राप्त करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हो विन्दा 1945 में मुम्बई आये। आपको 'राशनिंग इंस्पेक्टर' की अस्थाई नौकरी मिल गयी। आपने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में अध्ययन किया और 1946 में उच्च द्वितीय श्रेणी में अंग्रेज़ी में एम.ए. किया। 1946 से 1976 तक आपने कर्नाटक, पुणे और मुम्बई विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध विभिन्न महाविद्यालयों में कार्य किया। 1976 में आपने एस.आई.ई.एस. कॉलेज (मुम्बई) से अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष पद से ऐच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली।

1947 में विन्दा ने ज्योत्स्ना साने नामक विधवा महिला से विवाह किया, जो हाईस्कूल की अध्यापिका थीं। आपके जीवन में उनका आगमन महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि 1949 में उन्होंने खुद विन्दा का पहला कविता-संग्रह *स्वेदगंगा* प्रकाशित किया। इस पुस्तक के प्रकाशन के साथ ही आपकी गणना युवा कवियों में होने लगी और वी.एस. खांडेकर और प्रो. डब्ल्यू. एल. कुलकर्णी आपको आधुनिकतावादी क्रांति में नयी शक्ति मानने लगे। आपके *मृदगंधा* (1954), *धृपद* (1959), *जातक* (1968), *विरूपिका* (1981)-जैसे संकलनों और *संहिता* (1975) तथा *आदिमाया* (1990)-जैसे संचयनों ने आपको मराठी की सर्वाधिक मौलिक काव्यात्मक-प्रतिभा के रूप में स्थापित किया।

अंग्रेज़ी साहित्य के प्रोफ़ेसर के रूप में विन्दा के अकादमिक कार्य, पाश्चात्य साहित्य और समालोचना के गम्भीर अध्ययन ने आपको अरस्तू के *पोएटिक्स*, गोयथे के *फास्ट* और शेक्सपीयर के *किंग लियर*-जैसे पाश्चात्य गौरव ग्रंथों के आदर्श अनुवादों से मराठी भाषा को समृद्ध करने योग्य बनाया। अकादमिक कार्यों में आपके प्रकर्ष के नाते 1967 में आपको सीनियर फुलब्राइट पुरस्कार मिला। अपने अमेरिका प्रवास के दौरान आपको रिचर्ड मेकेन, रेने वेलेक और केनेथ बर्क-जैसे चिन्तकों के साथ साहित्यिक समस्याओं पर विचार-विमर्श करने और अपनी स्वयं की मराठी कविताओं

accident in which he fractured his hand, Vinda could not appear for his M.A. Exam till 1946.

The intervening period of six years (1939-1945) was a period of stress, trouble and turmoil in Vinda's life; but in a sense it was also a period of emotional, intellectual and literary development. In 1940, he entered into an improvident love marriage with Yesu Gokhale, who died after a couple of years. From 1942 to 1945, he had to work as a high school teacher at Tasgaon in Satara district and on that meagre income he had to maintain himself, his two sisters and a younger brother who had become a victim of consumption. In search of peace, for a brief period he embraced Gandhism and wore self-spun Khadi, developed his interest in Hindustani classical music and tried to learn the *tabla*. But the impact of the Quit India Movement would not allow him to rest and he carried on propaganda against enlistment in the army in the neighbouring villages.

It was in 1943 that Vinda seriously turned to the study of Marxism and that resulted in a major intellectual crisis in his life. But he was saved from Marxist dogmatism by his study of Bertrand Russell and Freud. Some of the poems written during this period—'Swedaganga', 'Keertan,' and 'Rakta Samadhi'—show his originality of content, form, style and rhythm and reveal his anti-romantic attitude. But no publisher was prepared to publish these poems.

Determined to get his M.A. degree, Vinda came to Bombay in 1945. He secured the temporay job of a rationing inspector, studied in the University library, and got his M.A. in English with a high second class in 1946. From 1946 to 1976 he worked in various colleges belonging to Karnataka, Pune and Bombay Universities. In 1976, he retired voluntarily from the S.I.E.S. College (Bombay) as the Head of the English Department.

In 1947 Vinda married Jyotsna Sane, a widow and a high school teacher. Her arrival on the scene is significant, because in 1949 she herself published *Swedaganga*—the first collection of Vinda's poetry. The book at once placed Vinda among the leading young poets, and critics like V.S. Khandekar and Prof. W.L. Kulkarni began to consider him a new force in the modernist revolution. His other collections like *Mridgandha* (1954), *Dhripad* (1959), *Jatak* (1968), *Virupika* (1981), and his selections like *Sanhita* (1975) and *Adimaya* (1990) established him as one of the most original poetic geniuses of Marathi.

Vinda's academic work as a professor of English literature —his in-depth study of Western literature and criticism— enabled him to enrich Marathi language with ideal translations of Western classics like Aristotle's *Poetics,* Goethe's *Faust,* and Shakespeare's *King Lear.* The excellence of his academic work brought him the Senior Fulbright Award in 1967. During his stay in the U.S.A. he had the opportunity to discuss literary problems with thinkers like Richard McKeon, Rene Welleck and Kenneth Burke and to cooperate with A.K. Ramanujan while translating his own Marathi

के अंग्रेज़ी अनुवाद के समय ए.के. रामानुजन के साथ सहयोग करने का अवसर मिला। साहित्यिक समालोचना के क्षेत्र में आपका योगदान महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह अभिगम की मौलिकता के साथ विद्वत्ता का सम्मिश्रण करती है; सर्जनात्मक स्वतंत्रता के आदर के साथ साहित्यिक मूल्यों के प्रति चिन्ता व्यक्त करती है और साहित्य को मूलतः एक जीवंत कला मानती है, ललित कला नहीं।

सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार के विजेता (1970) के रूप में विन्दा ने सोवियत संघ की यात्रा की और पुश्किन फेस्टिवॅल में भाग लिया। अमेरिका और सोवियत संघ—दोनों देशों में आपने कविता-पाठ किया। विन्दा का अनुवादों और सार्वजनिक कविता-पाठ कार्यक्रमों के सांस्कृतिक महत्त्व और उनकी आवश्यकता पर गहरा विश्वास है।

जब विन्दा का मराठी व्यक्तिव्यंजक निबंधों के क्षेत्र में प्रवेश हुआ तो वहाँ ठहराव आ चुका था। जीवन के प्रति इसे अधिक लचीला, अधिक संवेदनशील और अधिक उत्तरदायी बनाकर विन्दा ने इसमें नया जीवन भरा।

कविता के क्षेत्र में विन्दा के व्यापक योगदान को संक्षेप में बता पाना सरल नहीं है। आपके सतत् प्रयोगों ने मुक्त छंद, तालचित्र, मुक्त सॉनेट और विरूपिका-जैसी नयी शैलियों को मराठी कविता में जन्म दिया। आपके काव्य-सरगम में यथार्थवाद और फंतासी, व्यंग्यात्मक स्फोट और रहस्यात्मक छानबीन, ऐन्द्रिय प्रगेयात्मकता और अभिव्यंजक चित्रण, प्राचीन मिथ और वैज्ञानिक प्रत्यय शामिल हैं।

कविता की मुक्त दृष्टि में विन्दा का विश्वास है। फलस्वरूप आपने आधुनिकतावादी आंदोलन को अपने प्रसार में अधिक व्यापक, समकालीन लोकाचार की जटिलता के प्रति अधिक उत्तरदायी और कई अपरिचित भावमुद्राओं के प्रति अधिक अभिव्यंजक बनाया है। अपने कनिष्ठ पुत्र की स्नायविक बीमारी से उत्प्रेरित हो विन्दा बाल कविताओं की ओर मुड़े और 12 खण्डों में संगृहीत ये कविताएँ उस क्षेत्र में एक नये युग का प्रारम्भ करती हैं।

विन्दा को अब तक बीस से अधिक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। इनमें केशवसुत पुरस्कार (1968), सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार (1970), कुमारन आशान पुरस्कार (1982), कुसुमाग्रज पुरस्कार (1987), कबीर सम्मान (1991), जनस्थान पुरस्कार (1993) और कोणार्क पुरस्कार (1993) शामिल हैं, जो एक लम्बे, समर्पित और उर्वर काव्य-जीवन के फलस्वरूप मिले हैं। साहित्य को आपके योगदान के लिए तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ ने 1944 में आपको डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया।

उमाशंकर जोशी का कहना है, "विन्दा उन सर्जनात्मक लेखकों में से एक हैं, जिनकी साहित्यिक कृतियों से भाषा एक महान सामाजिक उपलब्धि बन जाती है।" एक गरीब ब्राह्मण किसान के पुत्र, जो बाद में कवि और प्रोफ़ेसर बने, अपने व्यक्तित्व और लेखन में, पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव तले बीसवीं सदी की भारतीय संस्कृति के प्रवाह और अंतर्विरोध को व्याख्यायित करते हैं।

मराठी में, मुख्यतया कविता के क्षेत्र में, अपने उत्कर्ष के लिए साहित्य अकादेमी श्री विन्दा करंदीकर को अपने सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, से विभूषित करती है। □

poems into English. His contribution to literary criticism is significant because it combines scholarship with originality of approach, a concern for literary values with a regard for creative freedom and considers literature primarily as a vital art and not as a fine art.

As a recipient of the Soviet Land Nehru Literary Award (1970) Vinda visited the U.S.S.R. and participated in the Pushkin Festival. He had poetry-reading programmes both in the U.S.A. and the U.S.S.R. Vinda strongly believes in the necessity and cultural significance of translations and public poetry-reading programmes.

The personal essay in Marathi was facing stagnation when Vinda entered the field. Vinda breathed new life into it by making it more pliant, more sensitive and more responsive to life.

It is not easy to sum up Vinda's varied contribution to poetry. His ceaseless experimentation has given rise to new forms of free verse, the *talachitras,* the Free Sonnets and the *virupikas.* The gamut of his poetry includes realism and fantasy, satirical outbursts and mystical probing, sensuous lyricism and expressive portraits, ancient myths and scientific concepts. Vinda believes in an open view of poetry. As a result, he made the modernist movement more comprehensive in its scope, more responsive to the complexity of contemporary ethos, and more expressive of several unfamiliar moods. Stimulated by the neurotic sickness of his younger son, Vinda turned to children's verse, and these poems, collected in 12 volumes ushered in a new era in that field.

Vinda has been the recipient of more than twenty prizes and awards. These include Keshavsut Prize (1968), Soviet Land Nehru Literary Award (1970), Kumaran Asan Award (1982), Kusumagraj Puraskar (1987), Kabir Samman (1991), Janasthan Puraskar (1993), and Konark Samman (1993), which crown a long, devoted and fruitful poetic career. In recognition of his contribution to literature, the Tilak Maharashtra Vidyapith conferred on him an Hon. D. Litt. in 1994.

"Vinda is one of those creative writers," says Umashankar Joshi, "by whose literary work the language becomes a great social achievement." Son of a poor Brahmin farmer turned poet and professor, he sums up in his personality and writing, the currents and contradictions of twentieth century Indian culture under the impact of Western civilization.

For his eminence primarily as a poet in Marathi the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, on Vinda Karandikar. □